निस्केयर
NISCAIR

विज्ञान प्रगति

मार्च 2016

प्रमुख सम्पादक
दीक्षा बिष्ट

सम्पादक
बालक राम

प्रोडक्शन अधिकारी
सुप्रिया गुप्ता
एस. पी. सिंह

कला अधिकारी
नीरू विजन

कम्पोज़िंग
मीरा देवी

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा

आवरण
नीरू विजन

अभी डेंगू और चिकनगुनिया के कहर से निजात मिली ही थी कि 'जीका' वायरस का खौफ पूरी दुनिया में मंडराने लगा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तो इसे वैश्विक स्वास्थ्य समस्या ही घोषित कर दिया है। यद्यपि अभी भारत देश को इसके खतरे से बाहर बताया जा रहा है पर 'दुर्घटना से सावधानी भली' वाली बात को याद करके समय रहते चेत जाना जरूरी है, क्योंकि यह वायरस भी डेंगू और चिकनगुनिया के कहर बरपाने वाले मच्छर *एडीज़ एजिप्टी* के काटने से ही फैलता है और हमारे देश में डेंगू से हुई अकाल मृत्युओं का आंकड़ा देखते हुए इस ओर ध्यान देना बहुत जरूरी हो गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तो पहले ही इस बात को लेकर शंका व्यक्त कर दी है कि यदि यह बीमारी एशिया महाद्वीप तक पहुंच जाती है तो यहां की जलवायु इसके लिए बहुत अनुकूल है। भारत का गर्म उमस भरा तापमान *एडीज़ एजिप्टी* मच्छर के पनपने के लिये बड़ा ही अनुकूल है। अभी तक यह वायरस दक्षिण और मध्य अमेरिका के 33 राज्यों में अपना कहर बरपा चुका है जिससे ब्राजील, कोलम्बिया, मेक्सिको, पोर्टो रिको और वेनेजुएला आदि प्रभावित हो चुके हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि सावधानी और कड़ी निगरानी से ही जीका वायरस से बचा जा सकता है।

इसका सबसे बड़ा कहर गर्भस्थ शिशुओं पर पड़ता है क्योंकि जीका वायरस गर्भस्थ शिशु के मस्तिष्क को अपना निशाना बनाता है। परिणामस्वरूप बच्चे 'माइक्रोसिफेली' नामक बीमारी के ग्रास बन रहे हैं। इस बीमारी से गर्भस्थ शिशु का सिर असामान्य रूप से छोटा हो जाता है और ब्रेन डैमेज का खतरा बना रहता है। ब्राजील में तो इससे हजारों नवजात शिशुओं के प्रभावित होने का खतरा बना हुआ है। वेनेजुएला ने तो वर्ष 2017 तक महिलाओं को गर्भधारण न करने की ही सलाह दे डाली है।

चूंकि इस बीमारी के लक्षण डेंगू और चिकनगुनिया से मिलते-जुलते हैं, इसलिए इसका इलाज भी उसी आधार पर किया जाता है। वैसे भी जीका वायरस का इलाज अभी उपलब्ध नहीं है परंतु वैज्ञानिकों ने इस वायरस की रोकथाम के लिये टीका विकसित करने के लिये शोध लगभग पिछले दो सालों से आरंभ कर दिये हैं। भारत की एक कंपनी ने तो टीका विकसित करने का दावा भी कर दिया है।

खैर, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में इसकी रोकथाम के उपाय तो खोज ही लिये जायेंगे पर तब तक इससे बचने के लिये इस बात पर अमल करना बहुत जरूरी है 'प्रिवेन्शन इज बैटर देन क्योर'।

पत्रिका का यह अंक आपको कैसा लगा। प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

विज्ञान प्रगति परिवार की ओर से होली की मंगलकामनाओं सहित।

मूल्य
एक अंक : 30.00 रुपये
एक वर्ष : 300.00 रुपये
दो वर्ष : 570.00 रुपये
तीन वर्ष : 810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65$
शिकायत : 011-25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370
प्रोडक्शन : 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 337
विज्ञापन : 011-25843359
बिक्री : 011-25841647, 25846301, 04-07/286, 289
फैक्स : 011-25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों ओर मतों के लिये सी.एस.आई.आर. -राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।